



सत्यमेव जयते

भारत सरकार

GOVERNMENT OF INDIA

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय

Ministry of Health and Family Welfare

राष्ट्रीय जन स्वास्थ्य प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान

National Institute of Public Health Training & Research

332, सरदार वल्लभभाई पटेल रोड, खेतवाडी, मुंबई 400004

332 S.V.P. ROAD, KHETWADI, MUMBAI-400 004, MAHARASHTRA, INDIA.

Phone/दूरभाष- 022-23881724 / 23893165 * फैक्स/Fax-- 022-23862736 * ईमेल/Email: director.fwtrc@nic.in

सूचना के अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 4 (1) (ख) के तहत सक्रिय प्रकटीकरण

क. संगठन एवं कार्य

1.4 कार्यों के निर्वहन के मानदंड

[धारा 4(1)(ख)(iv)]

i. कार्यों/सेवाओं की प्रकृति

1. स्वास्थ्य देखभाल कर्मचारियों का प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण
2. अनुसंधान गतिविधियाँ
3. प्रशासनिक कार्य
4. रोगी देखभाल सेवाएँ

ii. कार्यों/सेवा वितरण के मानदंड/मानदंड

1. स्वास्थ्य देखभाल कर्मचारियों का प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण
सेवारत और प्रायोजित उम्मीदवारों के लिए नियमित पाठ्यक्रम:

(i) स्वास्थ्य संवर्धन शिक्षा में डिप्लोमा (डीएचपीई): स्वास्थ्य शिक्षा में एक वर्षीय डिप्लोमा (डीएचई)

पाठ्यक्रम 1987 में स्वास्थ्य शिक्षा विशेषज्ञों और पैरामेडिकल कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय प्रशिक्षित स्वास्थ्य जनशक्ति के विकास की योजना के अंतर्गत शुरू किया गया था। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की सिफारिशों के बाद 2000 में इस पाठ्यक्रम का नाम बदलकर स्वास्थ्य संवर्धन शिक्षा में डिप्लोमा (डीएचपीई) कर दिया गया।

ii) सामुदायिक स्वास्थ्य देखभाल में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीडीसीएचसी): राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति-2002 और उसके बाद शुरू किए गए राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (एनआरएचएम) के अनुसार, जमीनी स्तर पर एकीकृत तरीके से गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने के लिए कुशल जनशक्ति विकसित करने हेतु 2007 में सामुदायिक स्वास्थ्य देखभाल में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीडीसीएचसी) पाठ्यक्रम शुरू किया गया था। यह पाठ्यक्रम आईआईपीएस मुंबई से संबद्ध है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य स्नातक प्रतिभागियों को स्वास्थ्य सेवाएँ बेहतर ढंग से प्रदान करने के लिए प्रबंधकीय कौशल प्रदान करना है। ये प्रशिक्षण विशेष रूप से देश के किसी भी हिस्से के केंद्रीय, राज्य और जिला स्तरीय स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के लिए तैयार किए गए हैं। संस्थान के ये नियमित पाठ्यक्रम, परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस), मुंबई (मानित विश्वविद्यालय) से संबद्ध हैं।

नए पाठ्यक्रम:

शैक्षणिक वर्ष 2021-22 से, एनआईपीएचटीआर ने निम्नलिखित पाठ्यक्रम भी शुरू किए हैं:

i) मास्टर ऑफ पब्लिक हेल्थ (एमपीएच) - महाराष्ट्र स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय (एमयूएचएस), नासिक

से संबद्ध दो वर्षीय पूर्णकालिक पाठ्यक्रम, जिसमें प्रति वर्ष 10 सीटें प्रवेश योग्य हैं, और

ii) अस्पताल प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीडीएचएम) - अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस), मुंबई (स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय) से संबद्ध एक वर्षीय पूर्णकालिक पाठ्यक्रम, जिसका उद्देश्य सक्षम जन स्वास्थ्य पेशेवरों की संख्या बढ़ाना है।

कौशल आधारित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम - एनआईपीएचटीआर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा चिन्हित दो कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित कर रहा है:

i. स्वच्छता निरीक्षक - 12 माह की अवधि का यह पाठ्यक्रम छात्रों को विभिन्न संगठनों और क्षेत्रों में स्वास्थ्य और स्वच्छता पहलुओं के प्रबंधन के लिए प्रशिक्षित करता है, जिससे वे जन स्वास्थ्य और पर्यावरण की रक्षा करने में सक्षम होते हैं।

ii. फर्स्ट रिस्पोंडर (एफआर - 3 दिन) - संस्थान विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारियों और आम जनता को प्राथमिक प्रतिक्रियाकर्ता तकनीकों पर एक अनुठा कौशल आधारित प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। इस विशेष प्रशिक्षण के माध्यम से प्रशिक्षुओं को पट्टी बांधना, सीपीआर, घावों पर ड्रेसिंग करना आदि जैसे आवश्यक कौशल सिखाए गए हैं। साथ ही, उन्हें आपदाओं के दौरान स्थितियों से निपटने का तरीका भी सिखाया गया है, जिससे वे प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया देने के लिए पूरी तरह से तैयार रहें।

विशेष प्रशिक्षण:

i) मिश्रित प्रशिक्षण कार्यक्रम - जीएफएटीएम - चरण III: भारत में एचआईवी संक्रमण के खिलाफ एकजुटता और कार्रवाई (एसएएटीआईआई), जो एड्स, तपेदिक और मलेरिया से लड़ने के लिए वैश्विक कोष (जीएफएटीएम) का एक प्रमुख प्राप्तकर्ता (पीआर) है, जीएफएटीएम कार्यक्रम के चरण III को लागू कर रहा है जिसमें एचआईवी की रोकथाम, परीक्षण-उपचार और देखभाल के लिए क्षमता निर्माण, कारावास में बंद आबादी के बीच एचआईवी हस्तक्षेप और मां से बच्चे में एचआईवी संचरण के उन्मूलन के घटक शामिल हैं। यह कार्यक्रम अप्रैल 2021 से मार्च 2024 के बीच कार्यान्वित किया जा रहा है।

जीएफएटीएम कार्यक्रम के तीसरे चरण के माध्यम से नाको को दिए जा रहे समर्थन के तहत, साथी का उद्देश्य नाको के पूर्व अनुभवों के आधार पर सेवा प्रदाताओं के माध्यम से लक्षित हस्तक्षेप (टीआई) प्रशिक्षण हेतु संस्थागत तंत्र स्थापित करना है। इसके लिए 19 क्षमता केंद्र स्थापित किए गए हैं। इन 19 क्षमता केंद्रों में से, एनआईपीएचटीआर एकमात्र केंद्रीय सरकारी संस्थान है जो मुंबई जिले और गोवा राज्य के लिए क्षेत्रीय क्षमता केंद्र के रूप में कार्य कर रहा है। क्षमता केंद्रों का उद्देश्य गैर सरकारी संगठनों और सामुदायिक संगठनों के उन कर्मचारियों को टीआई प्रशिक्षण देना है जो महिला यौनकर्मियों (एफएसडब्ल्यू), पुरुषों के साथ यौन संबंध रखने वाले पुरुषों (एमएसएम), हिजड़ा/ट्रांसजेंडर, नशीली दवाओं का इंजेक्शन लगाने वाले लोगों (पीडब्ल्यूआईडी) और लिंक वर्कर योजना के कर्मचारियों जैसे प्रमुख समूहों के बीच काम करते हैं।

ii) आई-एफईटीपी सेल- राष्ट्रीय जन स्वास्थ्य प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईपीएचटीआर), मुंबई ने 14 मई 2024 को राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी), दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, ताकि महाराष्ट्र राज्य और अन्य राज्यों में जन स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करने और संक्रामक रोगों के प्रकोप से निपटने के लिए मुंबई स्थित एनसीडीसी में मध्यवर्ती क्षेत्र महामारी विज्ञान प्रशिक्षण कार्यक्रम (आई-एफईटीपी) शुरू किया जा सके। आई-एफईटीपी कार्यक्रम का उद्देश्य जन स्वास्थ्य प्रणाली के मध्य स्तर पर, यानी जिला, राज्य और/या क्षेत्रीय स्तर पर कार्यरत जन स्वास्थ्य अधिकारियों की महामारी विज्ञान संबंधी क्षमता का निर्माण करना है। आई-एफईटीपी एक वर्षीय मेंटरशिप-आधारित ऑन-जॉब प्रशिक्षण कार्यक्रम है, जो एनसीडीसी द्वारा विकसित तीन स्तरीय क्षेत्र महामारी विज्ञान प्रशिक्षण कार्यक्रम पर आधारित है और सीडीसी अटलांटा, यूएसए के महामारी खुफिया सेवा (ईआईएस) कार्यक्रम के अनुरूप है। मध्यवर्ती एफईटीपी पाठ्यक्रम वैश्विक मानकों का पालन करता है, जिसमें ऑन-जॉब क्षेत्र प्रशिक्षण के साथ पांच संपर्क सत्र शामिल हैं। यह कार्यक्रम महामारी विज्ञान संबंधी आंकड़ों के विश्लेषण और क्षेत्र-आधारित जांच में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करता है, जिससे क्षेत्र महामारी विज्ञान के अभ्यास के लिए आवश्यक मूलभूत दक्षताओं का विकास हो सके।

iii) एनआईपीएचटीआर को टीकाकरण, संचार आदि जैसे कुछ विशिष्ट प्रशिक्षणों के लिए सहयोगी संस्थान के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। इसने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य देखभाल कार्यशालाओं जैसे विशेष क्षमता निर्माण कार्यक्रम स्वतंत्र रूप से और सहयोग से भी आयोजित किए हैं। प्रमुख जन स्वास्थ्य मुद्दों और राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों पर नियमित रूप से अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। हाल ही में स्वास्थ्य शासन और नेतृत्व, टीबी संगोष्ठी, सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन संचार (एसबीसीसी) के लिए राष्ट्रीय परामर्श आदि पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। पनवेल ब्लॉक के लिए आईसीडीएस पदाधिकारियों के लिए संवेदीकरण कार्यशाला (आरएमएनसीएच दिशानिर्देशों पर, जिसमें सीएचडी के प्रारंभिक रेफरल के साथ सामुदायिक निदान शामिल है) हर महीने आयोजित की जाती है।

iv) मिशन कर्मयोगी:

भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने मिशन कर्मयोगी के अंतर्गत अपनी वार्षिक क्षमता निर्माण योजना (एसीबीपी) शुरू की है। इसका उद्देश्य सरकारी अधिकारियों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को बढ़ाने और उनके करियर को आगे बढ़ाने के लिए आई-जीओटी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर व्यापक शिक्षण संसाधन उपलब्ध कराकर सिविल सेवकों की भूमिका-आधारित क्षमता निर्माण को बढ़ावा देना है। एनआईपीएचटीआर ने अपने सभी संकाय सदस्यों और कर्मचारियों को आई-जीओटी प्लेटफॉर्म पर सफलतापूर्वक एकीकृत कर लिया है। एनआईपीएचटीआर ने न केवल अपने 100% कर्मचारियों को अनिवार्य पाठ्यक्रमों का आई-जीओटी प्रशिक्षण प्रदान किया है, बल्कि आई-जीओटी प्लेटफॉर्म पर पाठ्यक्रमों के उपयोग में शीर्ष 3 संस्थानों में से एक है। एनआईपीएचटीआर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण

मंत्रालय का ज्ञान भागीदार है और स्वास्थ्य क्षेत्र के पाठ्यक्रमों के लिए सामग्री निर्माता है।

2. अनुसंधान:

क. आंतरिक अनुसंधान परियोजनाएँ:

- i. झारखंड राज्य में कुष्ठ रोग का जीआईएस मानचित्रण (2021-22)
- ii. जिला स्तर पर एनएलईपी संकेतकों का मानचित्रण और आवास स्तर पर कुष्ठ रोग मामलों का भौगोलिक-विशेष वितरण - महाराष्ट्र राज्य (2022-23)
- iii. स्थानिक पालघर जिले, महाराष्ट्र में कुष्ठ रोग की घटनाओं के जीआईएस मानचित्रण का उपयोग करके गांवों और कस्बों के स्तर पर संचरण क्षेत्रों और हॉटस्पॉट की पहचान
- iv. निदान में देरी की रोकथाम और एनएलईपी के लिए प्रौद्योगिकी निर्देशित हस्तक्षेप
- v. महाराष्ट्र राज्य के अर्ध-शहरी क्षेत्रों में कुष्ठ रोग मामलों का प्रोफाइल (2021-22)
- vi. महाराष्ट्र के आदिवासी गांवों में कुष्ठ रोग के ज्ञान, दृष्टिकोण और व्यवहार का समुदाय-आधारित क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन (2021-22)
- vii. अजीवेली पीएचसी, पनवेल में कुष्ठ रोग के कुछ महामारी विज्ञान संबंधी पहलुओं का अध्ययन (2021-22)
- viii. पनवेल के अजीवेली पीएचसी में मलेरिया के कुछ महामारी विज्ञान संबंधी पहलुओं का अध्ययन (2021-22)
- ix. पनवेल शहर में पेट्रोल पंप कर्मचारियों में उच्च रक्तचाप की व्यापकता, रुझान और संबंधित कारक।
- x. पनवेल के उपनगरीय क्षेत्र में प्रसवोत्तर अवसाद की व्यापकता और जोखिम कारक।
- xi. महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के पनवेल के आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों में प्रसवपूर्व सेवाओं का आकलन।
- xii. महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के अजीवेली के ग्रामीण क्षेत्र में किशोर स्कूली छात्राओं में मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन प्रथाएं, अपशिष्ट निपटान जागरूकता और गलत धारणाएं।
- xiii. पनवेल के अर्ध-शहरी क्षेत्र में मध्यम आयु वर्ग की महिलाओं में मासिक धर्म स्वास्थ्य और स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार।
- xiv. पनवेल में व्यावसायिक दोपहिया वाहन चालकों में मस्कुलोस्केलेटल और मानसिक स्वास्थ्य विकारों पर एक क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन।
- xv. रायगढ़ जिले के पोयांजे गांव (ग्रामीण क्षेत्र) और पोयांजे-वाड़ी (आदिवासी क्षेत्र) के ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च रक्तचाप की व्यापकता और उच्च रक्तचाप के विभिन्न कारकों के बीच संबंध।
- xvi. पनवेल में व्यावसायिक दोपहिया वाहन चालकों में मस्कुलोस्केलेटल और मानसिक स्वास्थ्य विकारों का आकलन - एक क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन।
- xvii. पनवेल तालुका की आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की गैर-संचारी रोगों की जांच (2023)।

ख. बाह्य अनुसंधान परियोजनाएँ:

आईसीएमआर की बर्न परियोजना: एनआईपीएचटीआर, मुंबई, आईसीएमआर के राष्ट्रीय कार्यबल परियोजना के दस परिधीय केंद्रों में से एक है, जिसका शीर्षक है "जले हुए घावों की व्यापकता, केएपी (ज्ञान, दृष्टिकोण और व्यवहार), रोकथाम एवं प्राथमिक उपचार, जीवन की गुणवत्ता और जेब से होने वाले व्यय का बहु-केंद्रित सामुदायिक-आधारित अध्ययन और सूचना, शिक्षा, संचार (आईईसी) हस्तक्षेपों का मूल्यांकन"। इस परियोजना का उद्देश्य जलने की व्यापकता, जोखिम कारकों, रोकथाम के लिए केएपी, जेब से होने वाले व्यय, जलने से घायल रोगियों के स्वास्थ्य संबंधी जीवन की गुणवत्ता और जलने की रोकथाम एवं प्राथमिक उपचार के संबंध में केएपी पर आईईसी हस्तक्षेपों के प्रभाव का निर्धारण करना है।

3) प्रशासन:

स्थापना संबंधी मामलों को त्वरित गति से निपटाया जाता है और समय सीमा के भीतर पूरा किया जाता है। वेतन और अन्य भत्ते भारत सरकार के मानदंडों के अनुसार संसाधित किए जाते हैं और अन्य दावों को निदेशक की स्वीकृति के बाद मामले-दर-मामले आधार पर प्राप्ति के बाद उचित समय सीमा के भीतर संसाधित किया जाता है।

4) रोगी देखभाल सेवाएँ:

क. क्लिनिकल सेवाएँ: संस्थान खेतवाड़ी परिसर और पनवेल परिसर में स्थित अपने क्लिनिकों के माध्यम से ओपीडी सेवाएं प्रदान करता है, साथ ही संलग्न प्रयोगशाला में बुनियादी जांच की सुविधा भी उपलब्ध है।

ख. पीत ज्वर टीकाकरण केंद्र: मुंबई स्थित एनआईपीएचटीआर, मुंबई, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा पीत ज्वर से प्रभावित देशों की यात्रा करने वाले अंतरराष्ट्रीय यात्रियों की सुविधा के लिए पीत ज्वर टीकाकरण हेतु मान्यता प्राप्त चार अधिकृत पीत ज्वर टीकाकरण केंद्रों में से एक है।

